श्री जिनेन्द्र पंचकल्याणक विधान

मोक्षकल्याणक

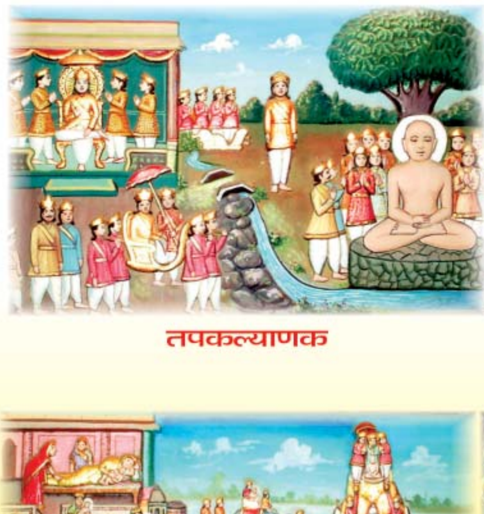

तपकल्याणक

ज्ञानकल्याणक

जन्मकल्याणक

गर्भकल्याणक

: प्रकाशक :

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट

सोनगढ (सौराष्ट्र)

भगवान श्री कुंदकुंद-कहान जैन शास्त्रमाला पुष्प नं. २७७

ॐ

॥ नमः सिद्धेभ्यः ॥

श्री जिनेन्द्र पंचकल्याणक विधान

સહજ ચિદાનંદ.

卐

: प्रकाशक :

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट

सोनगढ (सौराष्ट्र)

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ - ३६४२५०

2

प्रथमावृत्ति प्रत : १५०० वि.सं. २०७९ ई.स. २०२३

श्री जिनेन्द्र पंचकल्याणक विधान (हिन्दी) के

✾ स्थायी प्रकाशन पुरस्कर्ता ✾

कविताबेन अनिल शाह के स्मरणार्थ

हस्ते भावना केतन शाह तथा तेजस अनिल शाह तथा

धरणी निशांत शाह, मातुंगा (मुंबई)

ॐ

સહજ ચિદાનંદ.

मूल्य रू. 20=00

: मुद्रक :

स्मृति ओफसेट

सोनगढ (सौराष्ट्र)

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

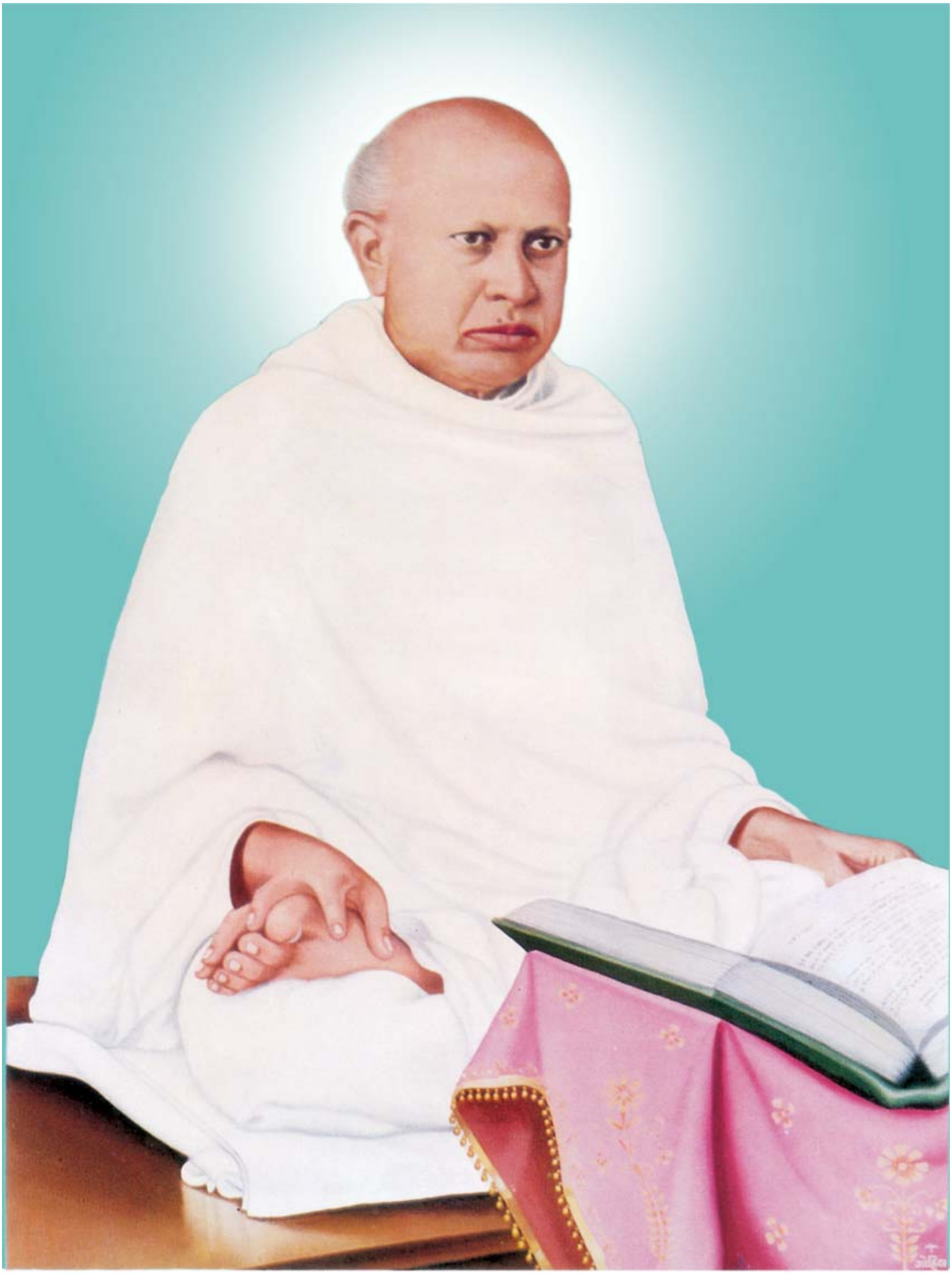

પરમ પૂજ્ય અધ્યાત્મમૂર્તિ સદ્‌ગુરુદેવ શ્રી કાનજીસ્વામી

प्रकाशकीय निवेदन

वीतराग दिगम्बर जैनधर्मके सातिशय प्रभावक अध्यात्ममूर्ति स्वात्मानुभवी सत्पुरुष पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामीने अध्यात्मतत्त्वके रहस्योद्‌घाटनके साथ साथ देव-शास्त्र-गुरुकी सच्ची पहिचान देकर मुमुक्षु समाजके उपर असीम उपकार किया है। उनके सत्प्रतापसे मुमुक्षु समाजमें जिनेन्द्र-पूजा, भक्तिकी प्रवृत्ति नियमित चल रही है। पूज्य गुरुदेवश्री स्वयं भी सोनगढ़में नियमितरूपसे जिनेन्द्रभक्तिमें उपस्थित रहते थे। उनके ही पुण्य प्रतापसे सौराष्ट्र, गुजरात एवं अन्यत्र अध्यात्म प्रचारके साथ साथ जिनमंदिर-निर्माण एवं पंचकल्याणक और वेदी प्रतिष्ठाका युग चला।

सोनगढमें परम पूज्य श्री महावीर भगवानके निर्वाणकल्याणक महोत्सव (दीपावली उत्सव)के समय कार्तिक वदी ११ से ३० तक पांच दिन पंचकल्याणक भक्ति-पूजा वर्षोंसे की जाती हैं। उसके संदर्भमें प्रशममूर्ति धन्यावतार भगवती पूज्य बहिनश्रीको यह पवित्र भावना स्फुरित हुई कि उक्त दिनों पंचकल्याणक पूजाका कार्यक्रम भी रखा जाय। पूज्य बहिनश्रीकी भावनाको साकार करते हुए यह पूजन मुद्रित किया जा रहा है।

आशा है मुमुक्षु समाज इस प्रकाशनसे लाभान्वित होगा।

पूज्य गुरुदेवश्रीकी १३४वीं जन्म-जयंती
ता. १७-४-२०२३

साहित्यप्रकाशनसमिति
श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट
सोनगढ

✻

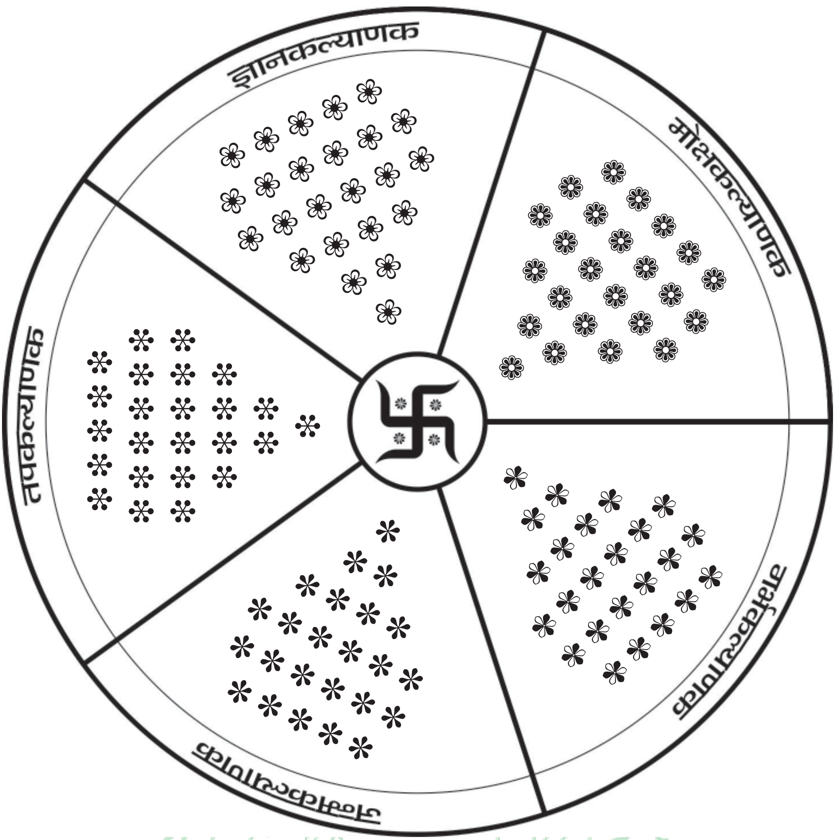

अनुक्रमणिका

- गर्भ कल्याणक पूजा ६
- जन्म कल्याणक पूजा १४
- तप कल्याणक पूजा २०
- ज्ञान कल्याणक पूजा २६
- मोक्ष कल्याणक पूजा ३२

ॐ

श्री जिनेन्द्र पंचकल्याणक विधान

मंगलाचरण

(गीता छंद)

मनुज नाग नरेन्द्र जाके उपरि छत्रत्रय धरे,
कल्यानपंचक मोदमाला पाय भवभ्रमतम हरे;
दर्शन अनंत अनंत ज्ञान अनंत सुख वीरज भरे,
जयवंत ते अरहंत शिवतियकंत मो उर संचरे।

जिन परम ध्यान कृशानुबान सुतान तुरंत जला दये,
युत गान जन्म जरा मरण भवत्रिपुर फेर नहीं भये;
अविचल शिवालय धाम पायो, स्वगुणतै न चले कदा,
ते सिद्धप्रभु अविरुद्ध मेरे शुद्ध ज्ञान करो सदा ।

जे पंचविध आचार निर्मल, पंच अग्नि सुसाधते,
पुनि द्वादशांग समुद्र अवगाहन, सकल भ्रम बाधते;
वर सूरि संत, महंत विधिगण, हरणको अति दक्ष है,
ते मोक्षलक्ष्मी देहु हमतो जहाँ नांहि विपक्ष है ।

जो घोर सब कानन कुअटवी, पाप पंचानन जहाँ,
तीक्ष्ण सकलजन दुःखकारा जास कौ नखगण महा;
तहं भ्रमत भूले जीवकौ शिवमग बतावै जे सदा,
तिन उपाध्याय मुनीन्द्रके चरणाविंद नमूं सदा ।

बिन संग उग्र अभंग तपतै अंगमें अति क्षीन है,
नहीं हीन ज्ञानानंद ध्यावत धर्मशुक्ल प्रवीन है;
अति तपो कमला कलित भासुर सिद्धपद साधन करे,
ते साधु जयवंतो सदा जे जगतके पातक हरे ।

।। इत्याशीर्वाद पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

गर्भ कल्याणक पूजा

स्थापना

(छप्पय)

रतनवृष्टि सो करत, धनद सुरपति आज्ञा सिर।
मास अगाऊ षट् सो, अर नव मास लगा झिर॥
जनक-सदन लछमी निधि सोहत, उपमा किन मति?
जननि सुपन लख विमल गरभमें, आये श्रीपति॥
इहि विधि अनन्त महिमा धरन, सुख-समुद्र आनंद करन।
दुख हरन स्थापन कर भविक, मन वच तन पूजत चरन॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्ताः-श्रीवृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतिजिनसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट्। (इत्याह्वाननम्)

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्ताः-श्रीवृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतिजिनसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। (इति स्थापनम्)

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्ताः-श्रीवृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतिजिनसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्। (इति सन्निधीकरणम्)

सहज सिद्धानंद.

अष्टक

(गीतिका छन्द)

शुचि कनक कुम्भ लीयो सो भरकरि, नीर उज्ज्वल छानकें।
निरवारने तिरषा सु कारन, कुमति उर बिच भानकें॥
छप्पन सो देवी करत सेवा, सरस उत्सव ठानिकें।
हरषायकर जिनचरन पूजत, सरब आरत हानिकें॥१॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्तेभ्यो श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल सु चन्दन दुखनिकन्दन, मलयगिरि मनभावनो।
केशर कपूर मिलाय श्री जिनराज पूजन लावनो॥

छप्पन सो देवी करत सेवा, सरस उत्सव ठानिकैं।
हरषायकर जिनचरन पूजत, सरब आरत हानिकैं।।२।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्तेभ्यो श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्व०

सुन्दर प्रकाश उजास अक्षत, चन्द्रज्योति प्रकाशते।
मोती समान अखंड धोकर, पूँज पावत भाषते।।
छप्पन सो देवी करत सेवा, सरस उत्सव ठानिकैं।
हरषायकर जिनचरन पूजत, सरब आरत हानिकैं।।३।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्तेभ्यो श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्योऽक्षयप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति०

उत्कृष्टसों उत्कृष्ट पहुप, सुगंध सरस सुहावने।
अरु कामको निर्मूल कारन, चढ़त श्रीजिन पावने।।
छप्पन सो देवी करत सेवा, सरस उत्सव ठानिकैं।
हरषायकर जिनचरन पूजत, सरब आरत हानिकैं।।४।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्तेभ्यो श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

रस रसत सरस सुहात नेत्रन, अमल शुद्ध पिछानकैं।
जिनराज चरन चढ़ाय प्रीतम, क्षुधा भागत जानकैं।।
छप्पन सो देवी करत सेवा, सरस उत्सव ठानिकैं।
हरषायकर जिनचरन पूजत, सरब आरत हानिकैं।।५।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्तेभ्यो श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक प्रकाश सुहात सुन्दर, पात्रमें धर लायकैं।
अज्ञान-तिमिर विनाश कारन, करत आरति गायकैं।।
छप्पन सो देवी करत सेवा, सरस उत्सव ठानिकैं।
हरषायकर जिनचरन पूजत, सरब आरत हानिकैं।।६।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्तेभ्यो श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्व०

चन्दन सु अगर सुगंध सुन्दर, मलय धूप दशांग सो।
खेवहूँ सु पावक माहिं जिन तट, जरत कर्म कुसंग सो॥
छप्पन सो देवी करत सेवा, सरस उत्सव ठानिकैं।
हरषायकर जिनचरन पूजत, सरब आरत हानिकैं॥७॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्तेभ्यो श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति०

खारक बदाम सो लायची, लोंगादि पुंगीफल सुधे।
जिनराज चरन चढ़ाय अनुक्रम, मुकति-फल पावत बुधे॥
छप्पन सो देवी करत सेवा, सरस उत्सव ठानिकैं।
हरषायकर जिनचरन पूजत, सरब आरत हानिकैं॥८॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्तेभ्यो श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध अक्षत पुष्प नेवज, दीप धूप सु फल भले।
ये द्रव्य अरघ बनाय रुचिकर, चढ़त श्रीजिन अघ टले॥
छप्पन सो देवी करत सेवा, सरस उत्सव ठानिकैं।
हरषायकर जिनचरन पूजत, सरब आरत हानिकैं॥९॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्तेभ्यो श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येक पूजा

(चौपाई)

दोज अषाढ़ कृष्ण पखवारा, सरवारधसिधिसों अवतारा।
नाभिरायके घर सुखदाये, मरुदेवी के उर में आये॥१॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णद्वितीयादिने गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीऋषभदेवाय अर्घ्यम् निर्वपामीति०

जेठ अमावस वदि दिन सारा, विजय विमान त्याग अवतारा।
जितशत्रू घर त्रिय सुखधामा, विजया कूख बसे अभिरामा॥२॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाऽमावस्यायां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीअजितजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति०

फागुन सुदी आठें दिन खासा, ग्रैवेयकको तजकर वासा।
नृप जितारि रमणी गुण सारे, नाम सुसेना गर्भ पधारे।।३।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लाष्टम्यां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीसम्भवजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति०

विजय विमान त्याग थिति भाना, सुदि वैशाख षष्टमी ठाना।
संवरराय त्रिया गुण खरे, सिद्धार्था घर अवतरे।।४।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लषष्ठीदिने गर्भमंगलमंडिताय श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

सावन सुदि दोयज दरसाये, विजय विमान त्यागकर आये।
नृपति मेघप्रभ तिय सुखकारा, नाम मंगला उर अवतारा।।५।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लद्वितीयादिने गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

माघ वदी छठ दिन अभिरामा, ऊरघ ग्रैवेयक तज धामा।
धारनीश राजा सुख पाये, मात सुसीमाके उर आये।।६।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णषष्ठीदिने गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति०

भादव सुदि छठ मंगलकारी, सुप्रतिष्ठत राजा गुणधारी।
माता पृथ्वीके उर आए, मध्यम ग्रैवेयकतैं आए।।७।।

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लषष्ठीदिने गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति०

चैत वदी पंचमी शुभ थानै, वैजयंत तजिकें सो विमानै।
मात सु लक्ष्मणाके उर आए, महासेन राजा मन भाए।।८।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णपंचम्यां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

आरनसे तजकर परजायो, रामादेवी के उर जायो।
नृप सुग्रीव महा उतसायो, फागुन वदि नवमी दिन गायो।।९।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णनवम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति०

चैत्र वदी आठें तिथि खासी, अच्युत स्वर्ग तजकें सुखरासी।
दृढरथ भूप सुनंदा देवी, उपजे कूख सबन सुख लेवी।।१०।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाष्टम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति०

वाहन विमल नृपति उपकारी, विमलादेवी गुण आचारी।
पुष्पोत्तर तजि जनम सो लीनो, वदी छठ दिन शुभ कीनो ।।११।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णषष्ठीदिने गर्भमंगलमंडिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति०

तजत भए महाशुक्र सु नाका, दिन आषाढ़ वदि छठ हित ताका।
राजा श्रीवसुपूज्य पियारे, देवी विजया कूख सिधारे ।।१२।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णषष्ठ्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति०

जेठ वदी दशमी दिन भारी, स्वर्ग तजो बारम सहस्रारी।
कृतवर्म्मा राजा त्रिय पाये, श्यामा नाम कूख पधराये ।।१३।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णदशम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति०

कार्तिक वदि परमा दिन कासा, पुष्पोत्तरको तजकै बासा।
सिंहसेन बड़भागी ताता, कूख बसे जयश्यामा माता ।।१४।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णप्रतिद्दिवसे गर्भमंगलमंडिताय श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

राजा भानु भयो उत्साहा, सुव्रतादेवी सती सु आहा।
ता उर सर्वारथतैं आये, आठें सुदी वैशाख बताये ।।१५।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाष्टम्यां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति०

भादव वदि सातें व्रत भारी, सर्वार्थसिधि तज गुणधारी।
विश्वसेन राजा अति प्यारी, आइराउर आये सुखकारी ।।१६।।

ॐ ह्रीं भाद्रपपदकृष्णसप्तम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति०

सावन वदि दशमी जग जाने, सरवारथसिधितें सु प्रयाने।
सूरसेन राजा गुणरासा, श्रीमति मातु कूख सुख वासा ।।१७।।

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णदशम्यां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति०

अपराजित विमान तज आए, माता मित्रा कूख बसाए।
फागुन सुदी तीज सुखकारी, नृपति सुदर्शन महिमा भारी ।।१८।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लतृतीयायां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति०

राजा कुम्भराय व्रतवानी, तासु प्रिया सुप्रभावति रानी।
अपराजित विमान तज डेरा, चैत्र सुदी परमा शुभ वेरा ।।१९।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लप्रतिपद्दिने गर्भमंगलमंडिताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति०

प्रानत स्वर्ग त्याग जिनराजा, सावन वदी दोज सुखसाजा।
तात सुमित्र सु विजया माई, जनम लयो त्रिभुवन के राई ।।२०।।

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णद्वितीयायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

विजयराज शोभत नृप ज्ञानी, आश्विन वदि शुभ दोज बखानी।
अपराजित विमान तज आए, विप्रा देवी कूख बसाए ।।२१।।

ॐ ह्रीं आश्विनकृष्णद्वितीयायां गर्भावतरणमंगलप्राप्ताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

कार्तिक सुदि छठ सब शुभ माने, आए तज सुजयंत विमाने।
समुदविजय शिवदिव्या रानी, ता उर जनम लिये निज ज्ञानी ।।२२।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लषष्ठ्यां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति०

प्रानत स्वर्ग त्यागकर आए, वदि वैशाख दोज गुण गाए।
विश्वसेन घर वामा रानी, ता उर ज्ञान बसे सुखकानी ।।२३।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णद्वितीयायां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

तजकर पुष्पोत्तर बड़भागी, तिथि आषाढ़ सुदी छट्ठ लागी।
सिद्धारथ राजा सुख पाए, प्रियकारिनी देवी उर आए ।।२४।।

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लषठ्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति०

(गीतिका छंद)

मन वचन काय त्रि शुद्ध करकें, चतुर्विंशति जिन जजों।
श्रीगर्भकल्याणक सु महिमा, बार बारहिं उर भजों।।
जिन जजत पाप समूह नाशें, सुखविधान सु पावहिं।
सब दुख निवारन सेव जिनकी, होत मंगल भावहीं ।।२५।।

ॐ ह्रीं वृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो गर्भमंगलमंडितेभ्योः महाऽर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

शोधन गर्भ सु वस्तुकर, षट् कुमारिका आय।
बहु देवी सेवा करत, निशिदिन घर आल्हाद।।

(पद्धरि छंद)

षट् मास अगाऊ करत सेव, छप्पन देवी उर भक्ति लेव।
नित रत्नवृष्टि होवत विख्यात, सब जन आनंद कर भाँत भाँत।।१।।
तब धनपति नगर सिंगार सार, बहु रतन हेममय रच अपार।
षट् मास गए तब मात रैन, सुपने सोलह शुभ लखे ऐन।।२।।
पति पास गई फल पूछि सार, सुनि जाई घर आनंद अपार।
फिर इन्द्रादिक आए न वार, करि कल्याणक गर्भावतार।।३।।
उत्सव कीनो अति ही महंत, पुनि निज थानक पहुँचे तुरन्त।
अब सुनो निर्मल मह प्रभाव, सेवत सुरंगना घर उछाव।।४।।
शुचि गर्भ स्थिति मह दीप्तिवान, त्रय ज्ञान सु भूषत गुण निधान।
तन वज्रवृषभनाराच धरन, सुन्दर सरूप दुति सरस करन।।५।।
शत आठ सु लक्षन रचत तास, नौ सै विंजन सोहत विख्यात।
सबके प्रियतम भविजन सु मात, जिनकी महिमा जग है विख्यात।।६।।
दरपन कोई इक लिये हाथ, कोई धर्म-कथा कहि नमत माथ।
कोई झारी कोईक पहुपमाल, कोई गहत बीजना नमत भाल।।७।।
बूझत केई मिलकर गूढ़ अर्थ, तिन ज्वाब कहत जननी समर्थ।
परिजन पुरजन सुर हरष गात, जिन पुण्य महातम कहो न जात।।८।।

(सोरठा)

इहविधि गर्भकल्याण को, कवि वरनन न करि सकै।
जाको पढ़त सुजान, विघन-हरन मंगल करन।।९।।

ॐ ह्रीं वृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो गर्भमंगलमंडितेभ्यः पूर्णाऽर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

(गीतिका छन्द)

हरषाय गाय जिनेन्द्र पूजत, पंचकल्याणक भले।
बहु पुण्य की बढ़वार जाके, विघन जात टले गले॥
जाके सुफल कर देह सुन्दर, रोग शोक न आवहीं।
घन धान्य पुत्र सुरेन्द्र सम्पति, राज निज सुख पावहीं॥१०॥

इत्याशीर्वादः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।)

ૐ
સહજ ચિદાનંદ.

जन्म कल्याणक पूजा

स्थापना

(गीता छन्द)

जिन नाथ चौविस पूजा करत हम उमगाय।
जग जन्म लेके जग उधारो, जजैं हम चितलाय॥
तिन जन्म कल्याणक सु उत्सव इन्द्र आय सुकीन।
हम हूं सुमर ता समयको पूजत हिये शुचि कीन॥

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्ताः श्री ऋषभादिमहावीरपर्यंत-चतुर्विंशतितीर्थंकराः ! अत्र अवतरत अवतरत संवौषट्। आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्ताः श्री ऋषभादिमहावीरपर्यंत-चतुर्विंशतितीर्थंकराः ! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्ताः श्री ऋषभादिमहावीरपर्यंत-चतुर्विंशतितीर्थंकराः ! अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् सन्निधीकरणम्।

(छन्द चाली)

जल निर्मल धार कटोरी, पूजूं जिन निज करजोड़ी।
पद पूजन करहूँ बनाई, जासे भवजल तरजाई॥

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्तेभ्यो ऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन केशरमय लाऊं, भवकी आताप शमाऊं।
पद पूजन करहूं बनाई, जासे भवजल तरजाई॥

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्तेभ्यो ऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत शुभ धोकर लाऊं, अक्षय गुणको झलकाऊं।
पद पूजन करहूँ बनाई, जासे भवजल तरजाई॥

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्तेभ्यो ऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सुन्दर पुहपनि चुनि लाऊं, निज काम व्यथा हटवाऊं।
पद पूजन करहूं बनाई, जासे भवजल तरजाई॥

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्तेभ्यो ऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पकवान मधुर शुचि लाऊं, हनि रोग क्षुधा सुख पाऊं।
पद पूजन करहूं बनाई, जासे भवजल तरजाई॥

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्तेभ्यो ऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक करके उजियारा, निज मोह तिमिर निरवारा।
पद पूजन करहूं बनाई, जासे भवजल तरजाई॥

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्तेभ्यो ऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूपायन धूप खिवाऊं, निज अष्ट करम जलवाऊं।
पद पूजन करहूं बनाई, जासे भवजल तर जाई॥

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्तेभ्यो ऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल उत्तम उत्तम लाऊं, शिवफल जासे उपजाऊं।
पद पूजन करहूं बनाई, जासे भवजल तरजाई॥

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्तेभ्यो ऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सब आठों द्रव्य मिलाऊं, मैं आठो गुण झलकाऊं।
पद पूजन करहूं बनाई, जासे भवजल तरजाई॥

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्तेभ्यो ऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्ताय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येकके अर्घ्य

(छन्द चाल)

वदी चैत नवमि शुभ गाई, मरुदेवी जने हरषाई।
श्री रिषभनाथ युग आदि, पूजूं भवमेटी अनादी ॥१॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण-नवम्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीऋषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

दसमी शुभ माघ वदीकी, विजया माता जिनजीकी।
उपजे श्री अजित जिनेशा, पूजूं मेटो सब क्लेशा ॥२॥

ॐ ह्रीं माघवदी-दशम्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

कार्तिक सुदि पूरणमासी, माता सुसैन हुल्लासी।
श्री संभवनाथ प्रकाशे, पूजत आपा पर भासे ॥३॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्ला-पूर्णमायां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

शुभ चौदस माघ सुदीकी, अभिनंदननाथ विवेकी।
उपजे सिद्धार्था माता, पूजूं पाऊं सुख साता ॥४॥

ॐ ह्रीं माघशुक्ला-चतुर्दश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

ग्यारस है चैत सुदीकी, मंगला माता जिनजीकी।
श्री सुमति जने सुखदाई, पूजूं मैं अर्घ्य चढ़ाई ॥५॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला-एकादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

कार्तिक वदि तेरसि जानो, श्री पद्मप्रभ उपजानो।
है मात सुसीमा ताकी, पूजूं ले रुचि समताकी ॥६॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णा-त्रयोदश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

शुचि द्वादश जेठ सुदीकी, पृथ्वी माता जिनजीकी।
जिननाथ सुपारश जाए, पूजूं हम मन हरषाए ॥७॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्ला-द्वादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ पूस वदी ग्यारसको, है जन्म चन्द्रप्रभ जिनको।
धन्य मात सुलखनादेवी, पूजूं जिनको मुनिसेवी ॥८॥

ॐ ह्रीं पौषवदी-एकादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीचंद्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

अगहन सुदि एकम जाना, जिन मात रमा सुख खाना।
श्री पुष्पदंत उपजाए, पूजत हूं ध्यान लगाए ॥९॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ला-प्रतिपदि जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

द्वादश वदि माघ सुहानी, नंदा माता सुखदानी।
श्री शीतल जिन उपजाए, हम पूजत विघ्न नशाए ॥१०॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णा द्वादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

फागुन वदि ग्यारस नीकी, जननी विमला जिनजीकी।
श्रेयांसनाथ उपजाए, हम पूजतहिं सुख पाए ॥११॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा-एकदशम्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम्०

वदि फाल्गुन चौदसि जाना, विजया माता सुख खाना।
श्री वासुपूज्य भगवाना, पूजूं पाऊं निज ज्ञाना ॥१२॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा-चतुर्दश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

शुभ द्वादश माघ वदीकी, श्यामा माता जिनजीकी।
श्री विमलनाथ उपजाए पूजत हम ध्यान लगाए ॥१३॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णा-द्वादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

द्वादशि वदि जेठ प्रमाणी, सुरजामाता सुखदानी।
जिननाथ अनन्त सुजाए, पूजत हम नाहिं अघाए ॥१४॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्ण-द्वादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

तेरसि सुदि माघ महीना, श्रीधर्मनाथ अघ छीना।
माता सुव्रता उपजाए, हम पूजत ज्ञान बढ़ाए ॥१५॥

ॐ ह्रीं माघशुक्ला-त्रयोदश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

वदि चौदस जेठ सुहानी, ऐरादेवी गुणखानी।
श्रीशांति जने सुख पाए, हम पूजत प्रेम बढ़ाए।।१६।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा-चतुर्दश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

पडिवा वैशाख सुदीकी, लक्ष्मीमति माता नीकी।
श्रीकुन्थुनाथ उपजाए, पूजत हम अर्घ्य चढ़ाए।।१७।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला-प्रतिपदि जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

अगहन सुदि चौदस मानी, मित्रादेवी हरषानी।
अर तीर्थंकर उपजाए, पूजे हम मन वच काए।।१८।।

ॐ ह्रीं अगहनशुक्ला-प्रतिपदि जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

अगहन सुदि ग्यारस आए, श्रीमल्लिनाथ उपजाए।
है मात प्रजापति प्यारी, पूजत अघ विनशै भारी।।१९।।

ॐ ह्रीं अगहनशुक्ला-एकादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

दशमी वैशाख वदी की, श्यामा माता जिनजीकी।
मुनिसुव्रत जिन उपजाए, हम पूजत पाप नशाए।।२०।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णा-दशम्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम्०

दशमी आषाढ़ वदीकी, विपुला माता जिनजीकी।
नमि तीर्थंकर उपजाए, पूजत हम ध्यान लगाए।।२१।।

ॐ ह्रीं आषाढकृष्णा-दशम्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

श्रावण शुक्ला छठि जानो, उपजे जिन नेमि प्रमाणो।
जननी सु शिवा जिनजीकी, हम पूजत हैं थल शिवकी।।२२।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्ला-षष्ठयां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

वदि पूष चतुर्दशि जानी, वामादेवी हरषानी।
जिन पार्श्व जने गुणखानी, पूजें हम नाग निशानी।।२३।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्ण-चतुर्दश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा०

शुभ चैत्र त्रयोदश शुक्ला, माता गुणखानी त्रिशला।
श्री वर्द्धमान जिन जाए, हम पूजत विघ्न नशाए।।२४।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला-त्रयोदश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(भुजंगप्रयात)

नमो जै नमो जै नमो जै जिनेशा, तुम्हीं ज्ञान सूरज तुम्हीं शिव प्रवेशा।
तुम्हें दर्श करके महामोह भाजे, तुम्हें पर्श करके सकल ताप भाजे।।१।।

तुम्हें ध्यानमें धारते जोगिराई, परम आत्म अनुभव छटा सार पाई।
तुम्हें पूजते नित्य इन्द्रादि देवा, लहैं पुण्य अद्भुत परम ज्ञान मेवा।।२।।

तुम्हारो जनम तीन भू दुःख निवारी, महामोह मिथ्यात्व हियसे निकारी।
तुम्हीं तीन बोधं धरे जन्मही से, तुम्हें दर्शनं क्षायिकं जन्मही से।।३।।

तुम्हें आत्मदर्शन रहे जन्मही से, तुम्हें तत्त्व बोधं रहे जन्मही से।
तुम्हारा महा पुण्य आश्चर्यकारी, सु महिमा तुम्हारी सदा पापहारी।।४।।

करा शुभ न्हवन क्षीरसागर सु जलसे, मिटी कालिमा पापकी अंग परसे।
हुआ जन्म सफल करी सेव देवा, लहूं पद तुम्हारा इसी हेतु सेवा।।५।।

(दोहा)

श्रीजिन चौबिस जन्मकी, महिमा उरमें धार।
पूज करत पातक टलें, बढ़े, ज्ञान अधिकार।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्तेभ्यो चतुर्विंशतिजिनेभ्यो महाऽर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

*

तपकल्याणक पूजा

स्थापना

(गीता छंद)

श्री रिषभदेव सु आदि जिन श्रीवर्द्धमान जु अंत हैं।
वंदहुं चरणवारिज तिन्होंके जपत तिनको संत हैं।।
करके तपस्या साधु व्रत ले मुक्तिके स्वामी भए।
तिन तपकल्याणक यजनको हम द्रव्य आठों हैं लए।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्ताः श्रीऋषभादि-वर्द्धमानजिना ! अत्रावतरतावतरत संवौषट्।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्ताः श्रीऋषभादि-वर्द्धमानजिना ! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्ताः श्रीऋषभादि-वर्द्धमानजिना ! अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् सन्निधिकरणम्।

(छंद चाली)

शुचि गंगाजल भर झारी, रुज जन्म मरण क्षयकारी।
तपसी जिन चोविस गाए, हम पूजत विघ्न नशाए।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्द्धमानजिनेन्द्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल चंदन घसि लाऊं, भव का आताप शमाऊं।
तपसी जिन चोविस गाए, हम पूजत विघ्न नशाए।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्द्धमानजिनेन्द्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत ले राशि दुतिकारी, अक्षयगुण के करतारी।
तपसी जिन चोविस गाए, हम पूजत विघ्न नशाए।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्द्धमानजिनेन्द्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बहु फूल सुवर्ण चुनाऊं, निज काम व्यथा हटवाऊं।
तपसी जिन चोविस गाए, हम पूजत विघ्न नशाए।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्द्धमानजिनेन्द्रेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

चरु ताजे स्वच्छ बनाऊं, निज रोग क्षुधा मिटवाऊं।
तपसी जिन चोविस गाए, हम पूजत विघ्न नशाए।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्द्धमानजिनेन्द्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक ले तम हरनारा, निज ज्ञानप्रभा विस्तारा।
तपसी जिन चोविस गाए, हम पूजत विघ्न नशाए।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्द्धमानजिनेन्द्रेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूपायन धूप खिपाऊं, जिन आठों कर्म जलाऊं।
तपसी जिन चोविस गाए, हम पूजत विघ्न नशाए।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्द्धमानजिनेन्द्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल सुन्दर ताजे लाऊं, शिवफल से चाह मिटाऊं।
तपसी जिन चोविस गाए, हम पूजत विघ्न नशाए।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्द्धमानजिनेन्द्रेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ आठों द्रव्य मिलाऊं, करि अर्घ परम सुख पाऊं।
तपसी जिन चोविस गाए, हम पूजत विघ्न नशाए।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्द्धमानजिनेन्द्रेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येक अर्घ्य

(छंद : चाली)

नौमी वदि चैत प्रमाणी, वृषभेष तपस्या ठानी।
निजमें निज रूप पिछाना, हम पूजत पाप नशाना।।१।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णानवम्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीवृषभजिनेन्द्राय अर्ध्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दसमी शुभ माघ वदीको, अजितेश लियो तप नीको।
जगका सब मोह्न हटाया, हम पूजत पाप भगाया।।२।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णदशम्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीअजितनाथाय अर्ध्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मगसिर सुदि पूरणमासी, संभव जिन होय उदासी।
कचलोच महातप धारो, हम पूजत भय निरवारो॥३॥

ॐ ह्रीं अगहनशुक्लापूर्णिमायां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादश शुभ माघ सुदीकी, अभिनंदन वन चलनेकी।
चित ठान परम तप लीना, हम पूजत हैं गुण चीन्हा॥४॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लाद्वादश्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यम् निर्वपामिति०

नौमी वैशाख सुदीमें, तप धारा जाकर वनमें।
श्री सुमतिनाथ मुनिराई, पूजूं मैं ध्यान लगाई॥५॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लानवम्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

कार्तिक वदि तेरसि गाई, पद्मप्रभु समता भाई।
वन जाय घोर तप कीना, पूजें हम समसुख भीना॥६॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णात्रयोदश्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

सुदि द्वादश जेठ सुहाई, बारा भावन प्रभु भाई।
तप लीना केश उखाड़े, पूजूं सुपार्श्व यति ठाड़े॥७॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लाद्वादश्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीसुपार्श्वजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

एकादश पौष वदीको, चंद्रप्रभु धारा तपको।
वनमें जिन ध्यान लगाया, हम पूजत ही सुख पाया॥८॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाएकादश्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीचंद्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

अगहन सुदि एकम जाना, श्री पुष्पदंत भगवाना।
तप धार ध्यान निज कीना, पूजूं आतम गुण चीन्हा॥९॥

ॐ ह्रीं अगहनशुक्लाप्रतिपदि तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

द्वादश वदि माघ महीना, शीतल प्रभु समता भीना।
तप राखो योग सम्हारो, पूजें हम कर्म निवारो।।१०।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णद्वादश्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

वदी फाल्गुन ग्यारस गाई, श्रेयांसनाथ सुखदाई।
हो तपसी ध्यान लगाया, हम पूजत हैं जिनराया।।११।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्ण एकादश्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

वदी फाल्गुन चौदसि स्वामी, श्री वासुपूज्य शिवगामी।
तपसी हो समता साधी, हम पूजत धार समाधी।।१२।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाचतुर्दश्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

वदि माघ चौथ हितकारी, श्री विमल सु दीक्षा धारी।
निज परिणतिमें लय पाई, हम पूजत ध्यान लगाई।।१३।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णचतुर्थ्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादश वदि जेठ सुहानी, वन आए जिन त्रय ज्ञानी।
घर सामायिक तप साधा, पूजूं अनंत हर बाधा।।१४।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाद्वादश्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

तेरस सुदि माघ महीना, श्री धर्मनाथ तप लीना।
वनमें प्रभु ध्यान लगाया, हम पूजत मुनिपद ध्याया।।१५।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लात्रयोदश्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

चौदस शुभ जेठ वदीमें, श्री शांति पधारे वनमें।
तहं परिग्रह तज तप लीना, पूजूं आतमरस भीना।।१६।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

करि दूर परिग्रह सारी, वैशाख सुदी पड़िवारी।
श्री कुंथु स्वात्मरस जाना, पूजन से हो कल्याणा ।।१७।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाप्रतिपदायां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

अगहन सुदि दशमी गाई, अरनाथ छोड़ गृह जाई।
तप कीना होय दिगंबर, पूजें हम शुभ भावों कर ।।१८।।

ॐ ह्रीं अगहनशुक्लाचतुर्दश्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

अगहन सुदि ग्यारस कीना, सिर केशलोच हित चीन्हा।
श्री मल्लि यतिव्रत धारी, पूजें नित साम्य प्रचारी ।।१९।।

ॐ ह्रीं अगहनशुक्लाएकादश्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

वैशाख वदी दशमीको, मुनिसुव्रत धारा व्रतको।
समता रसमें लौ लाए, हम पूजत ही सुख पाए ।।२०।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णदशम्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दशमी आषाढ़ वदीकी, नमिनाथ हुए एकाकी।
वनमें निज आतम ध्याए, हम पूजत ही सुख पाए ।।२१।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णादशम्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

छठि श्रावण शुक्ला आई, श्री नेमिनाथ वन जाई।
करुणाधर पशू छुड़ाए, धारा तप पूजूं ध्याए ।।२२।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लाषष्ठ्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

लखि पौष इकादशि श्यामा, श्री पार्श्वनाथ गुणधामा।
तप ले वन आसन ठाना, हम पूजत शिवपद पाना ।।२३।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाचतुर्दश्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

अगहन वदि दशमी गाई, बारा भावन शुभ भाई।
श्री वर्द्धमान तप धारा, हम पूजत हों भव पारा।।२४।।

ॐ ह्रीं अगहनकृष्णदशम्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(भुजंगप्रयातछंद)

नमस्ते नमस्ते नमस्ते मुनिन्दा। निवारे भली भांतिसे कर्मफंदा।
संवारे सु द्वादश तपं वन मंझारी। सदा हम नमत हैं तिन्हें मन सम्हारी।।१।।

त्रयोगशं प्रकारं सु चारित्र धारा। अहिंसा महा सत्य अस्तेय प्यारा।
परम ब्रह्मचर्य परिग्रह तजाया। सुधारा महा संयम मन लगाया।।२।।

दया धार भूको निरखकर चलत हैं। सुभाषा महा शुद्ध मीठी वदत हैं।
करें शुद्ध भोजन सभी दोष टालें। दयाको धरे वस्तु लें मल निकालें।।३।।

वचन काय मन गुप्तिको नित्य धारें। धरम ध्यानसे आत्म अपना विचारें।
धरें साम्य भावं रहें लीन निजमें। सु चारित्र निश्चय धरें शुद्ध मनमें।।४।।

ऋषभ आदि श्री वीर चौविस जिनेशा। बड वीर क्षत्री गुणी ज्ञान ईशा।
खड़ग ध्यान आतम कुबल मोह नाशा। जजें हम यतनसें स्व आतम प्रकाशा।५

(दोहा)

धन्य साधु सम गुण धरें, सहें परीसह धीर।
पूजत मंगल हों महा, टलें जगत जन पीर।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्तेभ्यः श्रीऋषभादि-वीरांतचतुर्विंशति-जिनेन्द्रेभ्यो महाऽर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

❀

ज्ञानकल्याणक पूजा

स्थापना

(गीता छन्द)

चौबीस जिनवर तीर्थकारी, ज्ञान कल्याणक धरं।
महिमा अपार प्रकाश जगमें, मोह मिथ्या तम हरं।।
कीने बहुत भविजीव सुखिया दुःखसागर उद्धरं।
तिनकी चरण पूजा करें, तिन सम बने यह रुचि धरं।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्ताः श्रीऋषभादिवीरान्तेभ्यो चतुर्विंशतिजिनसमूह! अत्र अवतरत अवतरत संवोषट्। (इत्याह्वाननम्)। ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्ता श्रीऋषभादिवीरान्तेभ्यो चतुर्विंशतिजिनसमूह! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः। (इतिस्थापनम्)। ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्ताः श्रीऋषभादिवीरान्तेभ्यो चतुर्विंशति-जिनसमूह! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्। (इति सन्निधिकरणम्)

(छंद चामरा)

नीर ल्याय शीतलं महान मिष्टता धरे, गन्ध शुद्ध मेलिके पवित्र झारिका भरे।
नाथ चौविस महान वर्तमान कालके, बोध उत्सवं करूं प्रमाद सर्व टालके।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्तेभ्यो ऋषभादिमहावीरपर्यंत-चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्वेत चंदनं सुगंधयुक्त सार लायके, पात्रमें धराय शांतिकारणे चढ़ायके।
नाथ चौविस महान वर्तमान कालके, बोध उत्सवं करूं प्रमाद सर्व टालके।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्तेभ्यो ऋषभादिमहावीरपर्यंत-चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

तंदुलं भले सुश्वेत वर्ण दीर्घ लाइये, पाय गुण सु अक्षतं अतृप्तिता नशाइये।
नाथ चौविस महान वर्तमान कालके, बोध उत्सवं करूं प्रमाद सर्व टालके।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्तेभ्यो ऋषभादिमहावीरपर्यंत-चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्ण वर्ण पुष्प सार लाइये चुनायके, काम कष्ट नाश हेतु पूजिये स्वभाविके।
नाथ चौविस महान वर्तमान कालके, बोध उत्सवं करूं प्रमाद सर्व टालके ।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्तेभ्यो ऋषभादिमहावीरपर्यंत-चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षीर मोदकादि शुद्ध तुर्त ही बनाइये, भूखरोग नाश हेतु चर्णमें चढ़ाइये।
नाथ चौविस महान वर्तमान कालके, बोध उत्सवं करूं प्रमाद सर्व टालके ।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्तेभ्यो ऋषभादिमहावीरपर्यंत-चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप धार रत्नमय प्रकाशता महान है, मोह अंधकार हार होत स्वच्छ ज्ञान है।
नाथ चौविस महान वर्तमान कालके, बोध उत्सवं करूं प्रमाद सर्व टालके ।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्तेभ्यो ऋषभादिमहावीरपर्यंत-चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप गंध सार लाय, धूपदान खेइये, कर्म आठको जलाय आप आप वेइये।
नाथ चौविस महान वर्तमान कालके, बोध उत्सवं करूं प्रमाद सर्व टालके ।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्तेभ्यो ऋषभादिमहावीरपर्यंत-चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

लौंग औ बदाम आम्र आदि पक्व फल लिये, सुमुक्तिधाम पायके स्व आत्म अमृत पिये।
नाथ चौविस महान वर्तमान कालके, बोध उत्सवं करूं प्रमाद सर्व टालके ।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्तेभ्यो ऋषभादिमहावीरपर्यंत-चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

तोय गंध अक्षतं सु पुष्प चारु चरु धरे, दीप धूप फल मिलाय अर्घ्य देय सुख करे।
नाथ चौविस महान वर्तमान कालके, बोध उत्सवं करूं प्रमाद सर्व टालके ।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्तेभ्यो ऋषभादिमहावीरपर्यंत-चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येक अर्घ्य

(छंद चाली)

एकादशि फागुन वदिकी, मरुदेवी माता जिनकी।
हत घाती कैवल पायो, पूजत हम चित उमगायो ।।१।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा-एकादश्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

एकादशि पूष सुदीको, अजितेश हतो घातीको।
निर्मल निज ज्ञान उपाये, हम पूजत सम सुख पाये ।।२।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्ला-एकादश्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

कार्तिक वदी चौथ सुहाई, संभव केवल निधि पाई।
भविजीवन बोध दियो है, मिथ्यामत नाश कियो है ।।३।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णाचतुर्थ्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

चौदशि शुभ पौष सुदीको, अभिनंदन हन घातीको।
केवल पा धर्म प्रचारा, पूजूं चरणा हितकारा ।।४।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्लाचतुर्दश्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

एकादशि चैत सुदीको, जिन सुमति ज्ञान लब्धीको।
पाकर भविजीव उधारे, हम पूजत भव हरतारे ।।५।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला-एकादश्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

मधु शुक्ला पूरणमासी, पद्मप्रभु तत्त्व अभ्यासी।
केवल ले तत्त्व प्रकाशा, हम पूजत सम सुख भाषा ।।६।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला-पूर्णिमायां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा०

छठि फाल्गुनकी अंधियारी, चउ घाती कर्म निवारी।
निर्मल निज ज्ञान उपाया, धन धन सुपार्श्व जिनराया ।।७।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाषष्ठ्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

फाल्गुन वदि नौमि सुहाई, चंद्रप्रभु आतम ध्याई।
हन घाती केवल पाया, हम पूजत सुख उपजाया ॥८॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णानवम्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीचंद्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

कार्तिक सुदि दुतिया जानो, श्री पुष्पदंत भगवानो।
रज हर केवल दरशानो, हम पूजत पाप विलानो ॥९॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लाद्वितीयायां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

चौदसि वदि पौष सुहानी, शीतलप्रभु केवलज्ञानी।
भवके संताप हटाया, समतासागर प्रगटाया ॥१०॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा-चतुर्दश्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

वदि माघ अमावसि जानो, श्रेयांस ज्ञान उपजानो।
सब जगमें श्रेय कराया, हम पूजत मंगल पाया ॥११॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णा-अमावस्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

शुभ दुतिया माघ सुदीको, पायो केवल लब्धीको।
श्री वासुपूज्य भवितारी, हम पूजत अष्ट प्रकारी ॥१२॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लाद्वितीयायां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

छठि माघ वदी हत घाती, केवल-लब्धि सुख लाती।
पाई श्री विमल जिनेशा, हम पूजत कटत कलेशा ॥१३॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णाषष्ठ्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

शुभ चैत अमावस गाई, जिन केवलज्ञान उपाई।
पूजूं अनंत जिन चरणा, जो है अशरणके शरणा ॥१४॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा-अमावस्या ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

मासांत पौष दिन भारी, श्री धर्मनाथ हितकारी।
पायो केवल सद्बोधं, हम पूजे छोड़ कुबोधं ॥१५॥

ॐ ह्रीं पौषपूर्णिमायां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति०

सुदि पूस इकादसि जानी, श्री शांतिनाथ सुखदानी।
लहि केवल धर्म प्रचारा, पूजूं मैं अघ हरतारा।।१६।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्ला-एकादश्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

वदि चैत्र तृतीया स्वामी, श्री कुंथुनाथ गुणधामी।
निर्मल केवल उपजायो, हम पूजत ज्ञान बढ़ायो।।१७।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णातृतीयायां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

कार्तिक सुदी बारस जानो, लहि केवलज्ञान प्रमाणो।
परतत्त्व निजतत्त्व प्रकाशा, अरनाथ जजो हत आशा।।१८।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लाद्वादश्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

वदि पूष द्वितीया जाना, श्री मल्लिनाथ भगवाना।
हत घाति केवल पाए, हम पूजत ध्यान लगाए।।१९।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाद्वितीयायां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

वैशाख वदी नौमीको, मुनिसुव्रत जिन केवलको।
लहि वीर्य अनंत सम्हारा, पूजूं मैं सुख करतारा।।२०।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णानवम्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

अगहन सुदि ग्यारस आए, नमिनाथ ध्यान लौ लाए।
पाया केवल सुखदाई, हम पूजत चित हरषाई।।२१।।

ॐ ह्रीं अगहनशुक्ला-एकादश्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

पडिवा शुभ वार सुदीको, श्री नेमनाथ जिनजीको।
इच्छो केवल सत ज्ञानं, हम पूजत ही दुःख हानं।।२२।।

ॐ ह्रीं अश्विनशुक्लाप्रतिपदायां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

तिथि चैत्र चतुर्थी श्यामा, श्री पार्श्वप्रभु गुणधामा।
केवल लहि तत्त्व प्रकाशा, हम पूजत कर शिव आशा।।२३।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाचतुर्थ्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति०

दशमी वैशाख सुदीको, श्री वर्धमान जिनजीको।
उपजो केवल सुखदाई, हम पूजत विघ्न नशाई॥२४॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला-दशम्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(सुग्विणी छन्द)

जय ऋषभनाथजी ज्ञानके सागरा, घातिया घातकर आप केवल वरा।
कर्मबन्धनमई सांकला तोड़कर, आपका स्वाद ले स्वाद पर छोड़कर॥१॥

धन्य तू धन्य तू धन्य तू नाथजी, सर्व साधू नमें तोहिको माथजी।
दर्श तेरा करैं ताप मिट जात है, मर्म भाजें सभी पाप हट जात है॥२॥

धन्य पुरुषार्थ तेरा महा अद्भुतं, मोहसा शत्रु मारा त्रिघाती हतं।
जीत त्रैलोक्यको सर्वदर्शी भए, कर्मसेना हती दुर्ग चेतन लए॥३॥

आप सत् तीर्थ त्रय रत्नसे निर्मिता, भव्य लेवें शरण होय भवन भव रिता।
वे कुशलसे तिरे संसृति सागरा, जाय ऊरुघ लहें सिद्ध सुन्दर धरा॥४॥

यह समवशर्ण भवि जीव सुख पात हैं, वाणि तेरी सुनें मन यही भात है।
नाथ दीजे हमें अमृत महा, इस बिना सुख नहीं दुःख भवमें सहा॥५॥

ना क्षुधा ना तृषा राग ना द्वेष है, खेद चिन्ता नही आर्ति ना क्लेश है।
लोभ मद क्रोध माया नही लेश है, बंदता हूं तुम्हें तू हि परमेश है॥६॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्तेभ्यः श्रीऋषभादिवीरांत-चतुर्विंशति-जिनेन्द्रेभ्यो महार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष कल्याणक पूजा

स्थापना

(त्रिभंगी)

जय जय तीर्थंकर मुक्तिवधूवर, भवसागर उद्धार करं।
जय जय परमातम शुद्ध चिदातम, कर्मकलंक निवारकरं।।
जय जय गुणसागर गुणरत्नाकर, आत्ममगनता सार धरं।
जय जय निर्वाणं पाय सुज्ञानं, पूजत पग संसार हरं।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्ताः-श्रीऋषभादिवीरान्तेभ्यो चतुर्विंशतिजिनसमूह! अत्र अवतरत अवतरत संवोषट्। (इत्याह्वाननम्)

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्ताः-श्रीऋषभादिवीरान्तेभ्यो चतुर्विंशतिजिनसमूह! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः। (इति स्थापनम्)

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्ताः-श्रीऋषभादिवीरान्तेभ्यो चतुर्विंशतिजिनसमूह! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्। (इति सन्निधीकरणम्)

(वसंततिलका छन्द)

पानी महान भरि शीतल शुद्ध लाऊं। जन्मादि रोग हर कारण भाव ध्याऊं।।
पूजूं सदा चतुर्विंशति सिद्ध कालं। पाऊं महान शिवमंगल नाश कालं।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्तेभ्यः श्रीऋषभादिमहावीरपर्यंत-चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो नमः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशर सुमिश्रित सुगंधित चन्दनादि। आताप सर्व भव नाशन मोह आदी।।
पूजूं सदा चतुर्विंशति सिद्ध कालं। पाऊं महान शिवमंगल नाश कालं।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्तेभ्यः श्रीऋषभादिमहावीरपर्यंत-चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो नमः संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन समान बहु अक्षत धार थाली। अक्षय स्वभाव पाऊं गुण रत्नशाली।।
पूजूं सदा चतुर्विंशति सिद्ध कालं। पाऊं महान शिवमंगल नाश कालं।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्तेभ्यः श्रीऋषभादिमहावीरपर्यंत-चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो नमः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चम्पा गुलाब मरुवा बहु पुष्प लाऊं। दुख टार काम हरके निज भाव पाऊं॥
पूजूं सदा चतुर्विंशति सिद्ध कालं। पाऊं महान शिवमंगल नाश कालं॥

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्तेभ्यः श्रीऋषभादिमहावीरपर्यंत-चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो नमः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे महान पकवान बनाये धारे। बाधा मिटाय क्षुधारोग स्वयं सम्हारे॥
पूजूं सदा चतुर्विंशति सिद्ध कालं। पाऊं महान शिवमंगल नाश कालं॥

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्तेभ्यः श्रीऋषभादिमहावीरपर्यंत-चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो नमः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपावली जगमगाय अंधेर घाती। मोहादि तम विघट जाय भव प्रपाती॥
पूजूं सदा चतुर्विंशति सिद्ध कालं। पाऊं महान शिवमंगल नाश कालं॥

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्तेभ्यः श्रीऋषभादिमहावीरपर्यंत-चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो नमः मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन कपूर अगरादि सुगंध धूपं। बालूं जु अष्ट कर्म हो सिद्ध भूपं॥
पूजूं सदा चतुर्विंशति सिद्ध कालं। पाऊं महान शिवमंगल नाश कालं॥

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्तेभ्यः श्रीऋषभादिमहावीरपर्यंत-चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो नमः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मीठे रसाल बादाम पवित्र लाए। जो महान फल मोक्ष सु आप पाए।
पूजूं सदा चतुर्विंशति सिद्ध कालं। पाऊं महान शिवमंगल नाश कालं॥

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्तेभ्यः श्रीऋषभादिमहावीरपर्यंत-चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो नमः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों सुद्रव्य ले हाथ अरघ बनाऊं। संसार वास हरके निज सुक्ख पाऊं॥
पूजूं सदा चतुर्विंशति सिद्ध कालं। पाऊं महान शिवमंगल नाश कालं॥

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्तेभ्यः श्रीऋषभादिमहावीरपर्यंत-चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो नमः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येक अर्घ्य

(गीता)

चौदश वदी शुभ माघकी कैलाशगिरि निज ध्यायके।
वृषभेश सिद्ध हुवे शचीपति पूजते हित पायके॥
हम धार अर्घ्य महान पूजा करें गुण मन लायके।
सब राग द्वेष मिटायके शुद्धात्म मनमें भायके॥१॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णाचतुर्दश्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

शुभ चैत सुदि पांचम दिना सम्मेदगिरि निज ध्यायके।
अजितेश सिद्ध हुए भविकगण पूजते हित पायके॥
हम धार अर्घ्य महान पूजा करें गुण मन लायके।
सब राग द्वेष मिटायके शुद्धात्म मनमें भायके॥२॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लापंचम्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

शुभ माघ सुदि षष्ठी दिना सम्मेदगिरि निज ध्यायके।
संभव निजातम केलि करते सिद्ध पदवी पायके॥
हम धार अर्घ्य महान पूजा करें गुण मन लायके।
सब राग द्वेष मिटायके शुद्धात्म मनमें भायके॥३॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लाषष्ठ्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

वैशाख सुदि षष्ठी दिना सम्मेदगिरि निज ध्यायके।
अभिनंदन शिव धाम पहुंचे शुद्ध निज गुण पायके॥
हम धार अर्घ्य महान पूजा करें गुण मन लायके।
सब राग द्वेष मिटायके शुद्धात्म मनमें भायके॥४॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाषष्ठ्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

शुभ चैत सुदि एकादशी सम्मेदगिरि निज ध्यायके।
श्री सुमतिजिन शिव धाम पायो आठ कर्म नशायके॥
हम धार अर्घ्य महान पूजा करें गुण मन लायके।
सब राग द्वेष मिटायके शुद्धात्म मनमें भायके॥५॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लाएकादश्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

शुभ कृष्ण फाल्गुन सप्तमी सम्मेदगिरि निज ध्यायके।
श्री पद्मप्रभु निर्वाण हूवे स्वात्म अनुभव पायके।।
हम धार अर्घ्य महान पूजा करें गुण मन लायके।
सब राग द्वेष मिटायके शुद्धात्म मनमें भायके।।६।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णासप्तम्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीपद्मप्रभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

शुभ कृष्ण फाल्गुन सप्तमी सम्मेदगिरि निज ध्यायके।
श्रीजिनसुपार्श्व स्वस्थान लीयो स्वकृत आनंद पायके।।
हम धार अर्घ्य महान पूजा करें गुण मन लायके।
सब राग द्वेष मिटायके शुद्धात्म मनमें भायके।।७।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णासप्तम्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

शुभ शुक्ल फाल्गुन सप्तमी सम्मेदगिरि निज ध्यायके।
श्री चन्द्रप्रभु निर्वाण पहुंचे शुद्ध ज्योति जगायके।।
हम धार अर्घ्य महान पूजा करें गुण मन लायके।
सब राग द्वेष मिटायके शुद्धात्म मनमें भायके।।८।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लासप्तम्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीचंद्रप्रभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

शुभ भाद्र शुक्ला अष्टमी, सम्मेदगिरि निज ध्यायके।
श्री पुष्पदंत स्वधाम पायो, स्वात्म गुण झलकायके।।
हम धार अर्घ्य महान पूजा करें गुण मन लायके।
सब राग द्वेष मिटायके शुद्धात्म मनमें भायके।।९।।

ॐ ह्रीं भाद्रशुक्ला-अष्टम्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

दिन अष्टमी शुभ क्वार सुद, सम्मेदगिरि निज ध्यायके।
श्रीनाथ शीतल मोक्ष पाए, गुण अनंत लखायके।।
हम धार अर्घ्य महान पूजा करें गुण मन लायके।
सब राग द्वेष मिटायके शुद्धात्म मनमें भायके।।१०।।

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्ला-अष्टम्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

दिन पूर्णमासी श्रावणी, सम्मेदगिरि निज ध्यायके।
जिन श्रेयनाथ स्वधाम पहुँचे, आत्म लक्ष्मी पायके।।
हम धार अर्घ्य महान पूजा करें गुण मन लायके।
सब राग द्वेष मिटायके शुद्धात्म मनमें भायके।।११।।

ॐ ह्रीं श्रावणपूर्णमास्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

शुभ भाद्र सुद चौदश दिना, मंदारगिरि निज ध्यायके।
श्री वासुपूज्य स्वथान लीनो, कर्म आठ जलायके।।
हम धार अर्घ्य महान पूजा करें गुण मन लायके।
सब राग द्वेष मिटायके शुद्धात्म मनमें भायके।।१२।।

ॐ ह्रीं भाद्रशुक्लाचतुर्दश्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

आषाढ़ वद शुभ अष्टमी, सम्मेदगिरि निज ध्याय के।
श्री विमल निर्मल धाम लीनो, गुण पवित्र बनायके।।
हम धार अर्घ्य महान पूजा करें गुण मन लायके।
सब राग द्वेष मिटायके शुद्धात्म मनमें भायके।।१३।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णा-अष्टम्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

अमावसी वद चैत्र की, सम्मेदगिरि निज ध्यायके।
स्वामी अनंत स्वधाम पायो, गुण अनंत लखायके।।
हम धार अर्घ्य महान पूजा करें गुण मन लायके।
सब राग द्वेष मिटायके शुद्धात्म मनमें भायके।।१४।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा-अमावस्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

शुभ ज्येष्ठ शुक्ला चौथ दिन, सम्मेदगिरि निज ध्यायके।
श्री धर्मनाथ स्वधर्म नायक, भए निज गुण पायके।।
हम धार अर्घ्य महान पूजा करें गुण मन लायके।
सब राग द्वेष मिटायके शुद्धात्म मनमें भायके।।१५।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लाचतुर्थ्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

शुभ ज्येष्ठ कृष्णा चौदसी, सम्मेदगिरि निज ध्यायके।
श्री शांतिनाथ स्वधाम पहुँचे, परम मार्ग बतायके।।
हम धार अर्घ्य महान पूजा करें गुण मन लायके।
सब राग द्वेष मिटायके शुद्धात्म मनमें भायके।।१६।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

वैशाख शुक्ला प्रतिपदा सम्मेदगिरि निज ध्यायके।
श्री कुंथुनाथ स्वधाम लीनो, परम पद झलकायके।।
हम धार अर्घ्य महान पूजा करें गुण मन लायके।
सब राग द्वेष मिटायके शुद्धात्म मनमें भायके।।१७।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाप्रतिपदायां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

अमावसी वद चैतकी, सम्मेदगिरि निज ध्यायके।
श्री अरहनाथ स्वधाम लीनों, अमर लक्ष्मी पायके।।
हम धार अर्घ्य महान पूजा करें गुण मन लायके।
सब राग द्वेष मिटायके शुद्धात्म मनमें भायके।।१८।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा-अमावस्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

शुभ शुक्ल फाल्गुन पंचमी, सम्मेदगिरि निज ध्यायके।
श्री मल्लिनाथ स्वथान पहुंचे, परम पदवी पायके।।
हम धार अर्घ्य महान पूजा करें गुण मन लायके।
सब राग द्वेष मिटायके शुद्धात्म मनमें भायके।।१९।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लापंचम्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

फाल्गुन वदी शुभ द्वादशी, सम्मेदगिरि निज ध्यायके।
जिननाथ मुनिसुव्रत पधारे, मोक्ष आनंद पायके।।
हम धार अर्घ्य महान पूजा करें गुण मन लायके।
सब राग द्वेष मिटायके शुद्धात्म मनमें भायके।।२०।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाद्वादश्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् नि०

वैशाख कृष्णा चौदसी, सम्मेदगिरि निज ध्यायके।
नमिनाथ मुक्ति विशाल पाई, सकल कर्म नशायके।।
हम धार अर्घ्य महान पूजा करें गुण मन लायके।
सब राग द्वेष मिटायके शुद्धात्म मनमें भायके।।२१।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णाचतुर्दश्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

आषाढ़ शुक्ला सप्तमी, गिरनार गिरि निज ध्यायके।
श्री नेमिनाथ स्वधाम पहुंचे, अष्ट गुण झलकायके।।
हम धार अर्घ्य महान पूजा करें गुण मन लायके।
सब राग द्वेष मिटायके शुद्धात्म मनमें भायके।।२२।।

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लासप्तम्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

शुभ श्रावणी सुद सप्तमी, सम्मेदगिरि निज ध्यायके।
श्री पार्श्वनाथ स्वथान पहुंचे, सिद्धि अनुपम पायके।।
हम धार अर्घ्य महान पूजा करें गुण मन लायके।
सब राग द्वेष मिटायके शुद्धात्म मनमें भायके।।२३।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लासप्तम्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

अमावसी वद कार्तिकी, पावापुरी निज ध्यायके।
श्री वर्द्धमान स्वधाम लीनो, कर्म वंश जलायके।।
हम धार अर्घ्य महान पूजा करें गुण मन लायके।
सब राग द्वेष मिटायके शुद्धात्म मनमें भायके।।२४।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णा-अमावस्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व०

जयमाला

(भुजंगप्रयात छंद)

नमस्ते नमस्ते नमस्ते जिनंदा, तुम्हीं सिद्धरूपी हरे कर्म फंदा।
तुम्हीं ज्ञान सूरज भविक नीरजोंको, तुम्हीं ध्येय वायू हरो सब रजोंको।।१।।
तुम्हीं निष्कलंकं चिदाकार चिन्मय, तुम्हीं अक्षजीतं निजाराम तन्मय।
तुम्हीं लोक ज्ञाता तुम्हीं लोक पालं, तुम्हीं सर्वदर्शी हतो मान कालं।।२।।

तुम्हीं क्षेमकारी तुम्हीं योगिराजं, तुम्हीं सांत ईश्वर किया आप काजं।
तुम्हीं निर्भयं निर्मलं वीतमोहं, तुम्हीं साम्य अमृत पियो वीतद्रोहं॥३॥

तुम्हीं भव उदधि पारकर्ता जिनेशं, तुम्हीं मोह तमके निवारक दिनेशं।
तुम्हीं ज्ञाननीर भरे क्षीरसागर, तुम्हीं रत्न गुणके सु गंभीर आकर॥४॥

तुम्हीं चंद्रमा निज सुधाके प्रचारक, तुम्हीं योगियोंके परम प्रेम धारक।
तुम्हीं ध्यानगोचर सु तीर्थंकरोंके, तुम्हीं पूज्य स्वामी परम गणधरोंके॥५॥

तुम्हीं हो अनादि नहीं जन्म तेरा, तुम्हीं हो सदा सत् नहीं अंत तेरा।
तुम्हीं सर्वव्यापी परम बोध द्वारा, तुम्हीं आत्मव्यापी चिदानंद धारा॥६॥

तुम्हीं हो अनित्यं स्व परिणाम द्वारा, तुम्हीं हो अभेदं अमिट द्रव्य द्वारा।
तुम्हीं भेदरूपं गुणानंत द्वारा, तुम्हीं नास्तिरूपं परानंत द्वारा॥७॥

तुम्हीं निर्विकारं अमूरत अखेदं, तुम्हीं निष्कषायां तुम्हीं जीत वेदं।
तुम्हीं हो चिदाकार साकार शुद्धं, तुम्हीं हो गुणस्थान दूरं प्रबुद्धं॥८॥

तुम्हीं हो समयसार निजमें प्रकाशी, तुम्हीं हो स्वचारित्र आतम विकाशी।
तुम्हीं हो निरास्रव निराहार ज्ञानी, तुम्हीं निर्जरा बिन परम सुख निधानी॥९॥

तुम्हीं हो अबन्धं तुम्हीं हो अमोक्षं, तुम्हीं कल्पनातीत हो नित्य मोक्षं।
तुम्हीं हो अवाच्यं तुम्हीं हो अचिन्त्यं, तुम्हीं हो सु गणराज नित्यं॥१०॥

तुम्हीं सिद्धराजं तुम्हीं मोक्षराजं, तुम्हीं तीन भू के सु ऊरध विराजं।
तुम्हीं वीतरागं तदपि काज सारं, तुम्हीं भक्तजन भावका मल निवारं॥११॥

करैं मोक्ष कल्याणकं भक्त भीने, फुरैं भाव शुद्धं यही भाव कीने।
नमे हैं जजे हैं सु आनन्द धारें, शरण मंगलोत्तम तुम्हींको विचारें॥१२॥

(दोहा)

परम सिद्ध चौवीस जिन, वर्तमान सुखकार।
पूजत भजत सु भावसे, होय विघ्न निरवार॥

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्तेभ्यो चतुर्विंशतिवर्तमानजिनेन्द्रेभ्यो महार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

गर्भादिक मंगल किए, इन्द्रादिक सब आय।
लोकालोक विलोकिकै, सिद्ध निरंजन थाय॥१॥

(छंद तामरस)

जय श्री वृषभनाथ वृष करता, जय श्री अजित अजित मद हरता।
जय संभव भव कारण नासन, जय अभिनंदन अभिमत शासन॥२॥
जय श्री सुमति सुमत मत दाता, जय पद्माभ जगत विख्याता।
जय सुपार्श्व भव फांस विदारी, जय चंद्रप्रभ शशि दुति हारी॥३॥
जय श्री सुविधि अविध सत भंजी, जय शीतल वच जन मन रंजी।
जय श्रेयांस श्रेय दातारं, जय वासुपूज्य विद्रुम दुतिसारं॥४॥
जय विमल विमल गुण जग विस्तारं, जय अनंत गुण अतुल अपारं।
जय धर्मनाथ जिन धर्म प्रकाश्यो, जय शांति शांति शिव मार्ग विकाश्यो ॥५॥
कुंथुं कुंथुं आदिक प्रतिपालक, अर अरिवसु कर्म ध्यान प्रजालक।
मल्लि महामल काम निवारक, मुनिसुव्रत व्रत दुर्गति तारक॥६॥
जय श्री नमिजिन नमत सुरासुर, नेमनाथ रथ धर्म चक्र धुर।
जय श्री पार्श्व सार्श्व गुण धारी, जय श्री वर्द्धमान अविकारी॥७॥

(धत्ता)

चौवीस जिनंदा त्रिभुवन चंदा, आनंद कंदा भवफंदा।
जय पाप निकंदा हे गुणवृंदा, करहु अफंदा मम वृंदा॥

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादि-वीरान्तेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

❀

अर्घ्यावली

जम्बूद्वीप सम्बन्धी जिनचैत्यालयका अर्घ

जम्बू द्वीप सु खेतर मांही, है जेते जिनगेहा,
रतनमई वो बिगर किये हैं, ध्रुव सदा सिध जेहा।
कीर्तम कनकमई इत्यादिक, सहित विनय तिस मांही,
तिन सबको मैं मन वच तन करि, जजों चरण हित लाही।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धी जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्ध्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

भावी तीर्थंकर अर्घ

जल गंध सुअक्षत पुष्प, शुभ नैवेद्य धरुं,
लइ दीप धूप फल अर्घ, जिनवर पूज करुं।
अहो! धातकीखंड जिणंद भावी मनहारी,
जंबू-भरते जयवंत शिव मंगलकारी।
(—स्वर्णे वर्ते जयवंत शिव मंगलकारी।)

ॐ ह्रीं धातकीद्वीप-विदेहक्षेत्रस्थ भावि जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भावि विदेही गणधरका अर्घ

पावन जिनका नामस्मरण, मंगल सुखके दाता है,
धन्य धन्य अवतार प्रभु, त्रिभुवन कीर्तन गाता है।
शांति सुधाकरकी शीतल, शीकर भवदुःखहारी है,
देवेन्द्रकीर्ति गणधर-भगवान, चरण-पूजा सुखकारी है।

ॐ ह्रीं धातकीखण्डस्य विदेहक्षेत्रस्थ भावीतीर्थंकरस्य पादभ्रमर भावी मुख्य गणधरदेवाय अनर्घ्यपद प्राप्तये महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुवर्णपुरी अर्घ्य

भरि स्वर्णथाल वसु द्रव्य अर्चूं कर जोरि,
प्रभु सुनियो विनती नाथ, कहूं मैं भाव धरि,

अनुभूति तीर्थ महान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले।

ॐ ह्रीं सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिम्बेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

बाहुबली भगवानका अर्घ्य

वसुविधिके वस वसुधा सब ही, परवश अति दुःख पावे,
तिहि दुःख दूर करनको भविजन, अर्घ जिनाग्र चढ़ावे।
परम पूज्य वीराधिवीर जिन, बाहुबली बलधारी,
तिनके चरणकमलको नित प्रति, धोक त्रिकाल हमारी॥

ॐ ह्रीं वर्तमान अवसर्पिणीसमये प्रथम मुक्तिस्थानप्राप्ताय कर्मारिविजये वीराधिवीर वीराग्रणी श्री बाहुबली परमजिनदेवाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय अर्घ

(गीता छंद)

मैं देव श्री अर्हंत पूजूं, सिद्ध पूजूं चाव सों,
आचार्य श्री उवझाय पूजूं, साधु पूजूं भाव सों।
अर्हंत-भाषित वैन पूजूं, द्वादशांग रचे गनी,
पूजूं दिगंबर गुरुचरन, शिव हेत सब आशा हनी।
सर्वज्ञभाषित धर्म दशविध दयामय पूजूं सदा,
जजि भावना षोडश रतनत्रय जा विना शिव नहीं कदा।
त्रैलोक्यके कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय जजूं,
पन मेरु नंदीश्वर जिनालय खचर सुर पूजित भजूं।
कैलास श्री सम्मेद श्री गिरनार गिरि पूजूं सदा,
चंपापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा।
चौबीस श्री जिनराज पूजूं बीस क्षेत्र विदेह के,
नामवली इक सहस वसु जय होय प्रति शिवगेह के।

(दोहा)

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय,
सर्व पूज्य पद पूजहुं बहु विध भक्ति बढाय।

ॐ ह्रीं भावपूजा, भाववंदना, त्रिकालपूजा, त्रिकालवंदना करवी कराववी-भावना भाववी, श्री अरिहंतजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, सर्वसाधुजी-पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्धयादि षोडश कारणेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः। जल विषे, थल विषे, आकाश विषे, गुफा विषे, पहाड विषे, नगर-नगरी विषे, ऊर्ध्वलोक-मध्यलोक-पाताललोक विषे बिराजमान कृत्रिन-अकृत्रिम जिन-चैत्यालय जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्र विद्यमान वीस तीर्थंकरोभ्यो नमः। पांच भरत, पांच ऐरावत-दस क्षेत्र सम्बन्धी त्रीस चोवीसीना सातसो वीस जिनेभ्यो नमः। नंदीश्वरद्वीपसम्बन्धी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर, कैलास, चंपापुर, पावापुर, गिरनार आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबिद्री, मूडबिद्री, राजगृही, शत्रुंजय, तारंगा, सुवर्णपुरी आदि तीर्थक्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारण-ऋद्धिधारी सात परमऋषिभ्यो नमः। इति उपर्युक्तेभ्यः सर्वेभ्यो अर्घं निर्वपामीकि स्वाहा।

धन्य धन्य आज घडी

धन्य धन्य आज घडी कैसी सुखकार है,
महावीर दरबार लगा, महावीर दरबार है,
खुशियाँ अपार आज हर दिलपे छाई है,
दर्शनके हेतु सब जनता अकुलाई है, जनता अकुलाई हैं,
चारों ओर देखलो भीड बेसुमार है. महावीर० १

भक्ति से नृत्य-गान कोई हैं कर रहे,
आतम सुबोध कर पापोंसे डर रहे, पापोंसे डर रहे;
पल पल पुण्यका भरे भंडार है. महावीर० २

जय जयके नादसे गुंजा आकाश है,
छूटेंगे पाप सब निश्चय ये आश है, निश्चय ये आश है;
देखलो 'सौभाग्य' खुला आज मुक्तिद्वार है. महावीर० ३

चौवीस तीर्थंकरों की आरती

अघहर श्री जिनबिम्ब मनोहर चौवीस जिनका करो भजन।
आज दिवस कंचन सम उगियो, जिनमंदिर में चलो सजन। (टेक)

न्हवन थापना सहस्त्रनाम पढ, अष्टविधार्चन पूज रचन,
आरति अरु जयमाल स्तुति, स्वाध्याय त्रयकाल पठन;
जय जय आरति सुरनर नाचत, अनहद दुंदुभि बाजे बजन;
रत्नजडित कर थाल मनोहर, ज्योति अनुपम धूम्रतजन। अघ० १

ऋषभ, अजित, संभव सुखदाता, अभिनंदन के नमू चरन,
सुमति, पद्मप्रभ, देव सुपारस, चन्द्रनाथ वपु शुभ्रवरन;
पुष्पदंत, शीतल, श्रेयांस अरु, वासुपूज्य भव तारनतरन,
विमल, अनंत धर्मजिन शांति, कुंथु, अरह हर जन्ममरण। अघ० २

मल्लिनाथ, मुनिसुव्रत, नमिजिन, नेमि, पार्श्व हर अष्ट करम,
नाथंश है उन्नत कर सत, अंतिम सन्मति देव शरन;
समवसरणकी अगणित शोभा, बार सभा उपदेश धरन,
जिन उद्धारक, त्रिभुवन तारक, राव-रंकको है जु शरन। अघ० ३

तीर्थंकर गुण-माल कंठकर, जाप जपो तिन करो कथन;
देव-शास्त्र-गुरु विनय करो, इन तीन रतन का करो जतन। अघ० ४

ॐ जय जिनवर देवा

ॐ जय जिनवरदेवा, प्रभु जय जिनवरदेवा,
निशदिन देजो हे....जगदीश्वर पदपंकज सेवा....ॐ

दिव्यानंदी, दिव्यप्रकाशी, दैवी तुज देदार,
रिद्धि-सिद्धि-सुखनिधिना स्वामी, नित्य सुमंगलकार....ॐ

आज अमारे आंगणे पधार्या जिनवर जयवंता,
खंडधातकी-महाविदेही भावी भगवंता....ॐ

पूर्णगुणे परिणत परमेश्वर, त्रिलोक-तारणहार,
आवो पधारो त्रिभुवनतीरथ ! आतमना आधार !....ॐ

कृपा करो हे जिनवर ! मारां, थाय पूरां सौ काज,
सत्वर शिवपद दो सेवकने, चरण पूजुं जिनराज !....ॐ

✻

लाख लाख दीवडानी

लाख लाख दीवडानी आरती उतारजो,
लाख लाख तोरण बंधाय;
आंगणिये अवसर आनंदना.....(टेक)

लाख लाख द्रव्योंनी पूजा रचावजो;
लाख लाख हाथे कराय। आंगणिये....लाख० १

लाख लाख द्रव्योंनी पूजा रचावजो;
लाख लाख हाथे कराय। आंगणिये....लाख० १

खोबे खोबे रंग उडे गुलालना,
लाखों वधामणा जिनवरनां आवतां;
लाखेणी भक्ति कराय। आंगणिये....लाख० २

गावो गावो गीत गाजो गवरावजो,
ताने ताने नाच नाची नचावजो,
लाखेणा ल्हावा लेवाय। आंगणिये....लाख०३

लाख लाख गुरुजीना गुण गवरावजो;
लाख लाख (जीवोंना) उद्धार करनार। आंगणिये....लाख०४
जयकार जगतमां फेलाय। आंगणिये....लाख०४

❀

शान्तिपाठ

(शान्तिपाठ बोलते समय दोनों हाथोंसे पुष्पवृष्टि करनी)

(दोधक छंद)

शान्तिजिनं शशिनिर्मलवक्त्रं, शीलगुणव्रतसंयमपात्रम्,
अष्टशतार्चितलक्षणगात्रं, नौमि जिनोत्तमम्बुजनेत्रम् ।।१।।
पंचममीप्सितचक्रधराणां, पूजितमिन्द्रनरेन्द्रगणैश्च,
शान्तिकरं गणशान्तिमभीप्सुः, षोडशतीर्थंकरं प्रणमामि ।।२।।
दिव्यतरुः सुरपुष्पसुवृष्टिं, दुन्दुभिरासनयोजनघोषौ,
आतपवारणचामरयुग्मे, यस्य विभाति च मंडलतेजः ।।३।।
तं जगदर्चिशान्तिजिनेन्द्रं, शान्तिकरं सिरसा प्रणमामि,
सर्वगणाय तु यच्छतु शांतिं, मह्यमरं पठते परमां च ।।४।।

(वसंततिलका छंद)

येऽभ्यर्चिता मुकुटकुंडलहाररत्नैः,
शक्रादिभिः सुरगणैः स्तुतपादपद्माः;
ते मे जिनाः प्रवरवंशजगत्प्रदीपाः;
तीर्थंकराः सतत शान्तिकरा भवन्तु ।।५।।

(इन्द्रवज्रा)

संपूजकानां प्रतिपालकानां यतीन्द्रसामान्यतपोधनानाम्;
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शान्ति भगवान् जिनेन्द्रः ।।६।।

(स्रग्धरावृत्तम्)

क्षेमं सर्वप्रजानां प्रभवतु बलवान् धार्मिको भूमिपालः,
काले काले च सम्यग्वर्षतु मधवा व्याधयो यान्तु नाशम्;
दुर्भिक्षं चौरमारी क्षणमपि जगतां मास्मभूज्जीवलोके,
जैनेन्द्रं धर्मचक्रं प्रबवतु सततं सर्वसौख्यप्रदायि ।।७।।

(अनुष्टुप)

प्रध्वस्तघातिकर्माणः केवलज्ञानभास्कराः,
कुर्वन्तु जगतः शांतिं वृषभाद्या जिनेश्वरा ।।८।।

।।प्रथमं करणं चरणं द्रव्यं नमः ।।

(अथेष्ट प्रार्थना—मंदाक्रान्ता)

शास्त्राभ्यासो जिनपतिनुतिः संगतिः सर्वदार्यैः;
सद्वृत्तानां गुणगणकथा दोषवादे च मौनम्;
सर्वस्यापि प्रियहितवचो भावना चात्मतत्त्वे,
सम्पद्यंतां मम भवभवे यावदेतेऽपवर्गः ॥९॥

(आर्यावृत्तम्)

तव पादौ मम हृदये, ममहृदयं तव पदद्वये लीनम्;
तिष्ठतु जिनेन्द्र ! तावत् यावन्निर्वाणसम्प्राप्तिः ॥१०॥

अक्खरयत्थहीणं मत्ताहीणं च जं मए भणियं;
तं खमउ णाणदेव मज्झवि दुःक्खकखयं दिंतु ॥११॥

दुःक्ख-खओ कम्म-खओ समाहिमरणं च बोहिलाहो य;
मम होउ जगद-बंधव तव जिणवर चरणसरणेण ॥१२॥

(प्रार्थना—आर्या)

त्रिभुवनगुरो ! जिनेश्वर परमान्दैककारणं कुरुष्व;
मयि किंकरेऽत्र करुणां यथा तथा जायते मुक्तिः ॥१३॥

निर्विण्णोहं नितरामर्हन् बहुदुक्खया भवस्थित्या;
अपुनर्भवाय भवहर कुरु करुणामत्र मयि दीने ॥१४॥

उद्धर मां पतितमतो विषमाद् भवकूपतः कृपां कृत्वा;
अर्हन्नलमुद्धरणे त्वमसीति पुनः पुनर्वच्मि ॥१५॥

त्व कारुणिकः स्वामी त्वमेव शरणं जिनेश ! तेनाहं !
मोहरिपुदलितमानं फूत्करणं तव पुरः कुर्वे ॥१६॥

ग्रामतरेपि करुणा परेण केनाप्युपद्रुते पुंसि;
जगतां प्रभो ! न किं तव, जिन ! मयि खलु कर्मभिःप्रहते ॥१७॥

अपहर मम जन्म दयां, कृत्वा चेत्येकवचसि वक्तव्यं;
तेनातिदग्ध इति मे देव ! बभूव प्रलापित्वं ॥१८॥

तव जिनचरणाब्जयुगं करुणामृतशीतलं यावत्;
संसारतापतप्त करोमि हृदि तावदेव सुखी ।।१९।।
जगदेकशरणभगवन् ! नौमि श्रीपद्मनंदितगुणौध;
किं बहुना कुरु करुणामत्र जने शरणमापन्ने ।।२०।।

।। परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

*

विसर्जन

ज्ञानतोऽज्ञानको वापि शास्त्रोक्तं न कृतं मया;
तत्सर्वं पूर्णमेवास्तु त्वत्प्रसादाज्जिनेश्वर ।।१।।
आह्वानं नैव जानामि नैव जानामि पूजनं;
विसर्जनं न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ।।२।।
मंत्रहीनं क्रियाहीनं द्रव्यहीनं तथैव च;
तत्सर्वं क्षम्यतां देव रक्ष रक्ष जिनेश्वर ।।३।।
मंगलं भगवान वीरो मंगलं गौतमो गणी;
मंगलं कुंदकुंदार्यो जैनधर्मोऽस्तु मंगलम् ।।४।।
सर्वमंगल मांगल्यं, सर्वकल्याणकारकं;
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयतु शासनम् ।।५।।

*

शांतिपाठ

(वसंततिलकम्)

सीमंधरादिभवशान्किरा जिनेन्द्राः,
सर्वार्थसाधनगुणप्रणिधानरूपाः;
तेभ्योऽर्पयामि भवकारणनाशबीजं,
पुष्पांजलि विमलमंगलकामरूपम् ।

(पुष्पांजलि क्षिपेत्)

અનુભૂતિ તીર્થ મહાન, સ્વર્ણપુરી સોહે
યહ કહાનગુરુ વરદાન, મંગલ મુક્તિ મિલે.